BOMRIM

Bulletin on Microvita Research and Integrated Medicine

Official Bulletin of Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)

(Registered under Societies Registration Act 28, 1958 (Raj.) No. 73/UDR/08-09)

Vol. 1 No. 2 www.microvitamedresearch.com August 2009

बोमरिम का विमोचन करते मुख्य अतिथि आचार्य मधुव्रतानंद अवधूत एवं अन्य सदस्यगण

गुलाब बाग जन्तुआलय, उदयपुर में सेमल पौधारोपण करते SMRIM के सदस्य

सम्पादकीय

''पंचवटी'' – धनात्मक माइक्रोवाइटा का घनीभूत स्थल

सभी जानते हैं कि वनस्पतियाँ सजीव होती है। उनका अपना संसार होता है और उनकी अपनी जीवन यात्रा होती है। वे सूर्य की धूप और चन्द्रमा की चाँदनी से प्रभावित होते है। कुछ वनस्पतियों पर चन्द्र किरणों का अधिक और औषधि–वर्धक प्रभाव होता है। यहीं कारण है कि उनके संग्रहण में भी चन्द्रानुकूलता का पक्ष देखा जाता है। सृष्टि चक्र में जैसे मानव की अवस्थिति है वैसे ही वनस्पति का अपना स्थान है और इस सन्दर्भ में वे भी परम पुरूष के चिंतन प्रक्षेपण का ही एक भाग है।

कुछ पादपों में धनात्मक माइक्रोवाइटा को आकर्षित करने की व शत्रु स्वभाव (ऋणात्मक) माइक्रोवाइटा के विरूद्ध जूझने की विशेष क्षमता होती है। ऐसे ही पादपों को प्राचीन काल में ऋषि–मुनि अपने आश्रमों में स्थान देते थे, ताकि वहाँ जीवाणु मुक्त परिवेश के साथ ही वातावरण इन धनात्मक माइक्रोवाइटा के स्पन्दन से पवित्र रहे। इसी आध्यात्मिक अवधारणा ने ''पंचवटी'' के सिद्धान्त को जन्म दिया।

पंचवटी वह स्थल है जहाँ पाँच तरह के उन वृक्षों का अस्तित्व है जो यह विशेष गुण रखते है। स्वीकृत पंचवटी में नीम, बेल, सेमल, वट और पीपल वृक्ष आते है। विकल्प के रूप में आँवला या अशोक वृक्ष भी लिये जा सकते है। यह सभी वृक्ष औषधीय गुणों से परिपूर्ण है और पर्यावरण पवित्रता का गुण रखते हैं। अतः इन्हें मन्दिरों और धार्मिक स्थलों के निकट देखा जा सकता है।

नीम *(Azadirachta indica)* स्वीकृत पंचवटी में अन्यतम है। इसकी हवा कृमि विनाशक है तो है ही, शत्रु स्वभाव के माइक्रोवाइटा के विरूद्ध जूझने की विशेष क्षमता रखती है। नीम, रक्तदोष, चर्मरोग, यकृत सम्बन्धी रोग और मधुमेह में असरकारी है; साथ ही यह आयुवर्धक और असमय वृद्धावस्था को भी रोकता है। यह घनी छाया देता है, बादलों को आकाश से खींच लाता है और भू–क्षरण को रोकता है। इसकी हवा किसी भी चर्मरोग के लिए अच्छी तो है ही, मलेरिया और अनेक प्रकार के ज्वर रोगों की भी दवा है।

स्वीकृत पंचवटी का दूसरा वृक्ष बेल *(Aegle marmelos)* है। 'बिल्व' का अर्थ है जिस वस्तु में छिद्र है अथवा जो वस्तु छिद्र बनाती है। बेल एक सात्त्विक फल है, वह निकलने का पथ खोजता है साधारणतः मल के माध्यम से। इसीलिये बेल खाने से जल्दी पेट साफ होता है। पका हुआ बेल पुष्टिकर खाद्य तो है ही साथ ही पेट हो ठण्डा रखता है, स्नायुतन्तुओं को भी ठण्डा रखता है और मेधा में उत्कर्ष लाता है।

पंचवटी माइक्रोवाइटा का व्यवहारिक अनुप्रयोग है जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, साथ ही पर्यावरण शुद्धता की दिशा में अभिनव प्रयोग है। यह परम पुरूष का पादपों के माध्यम से, अणुजीवत (माइक्रोवाइटा) की सहायता से मानव के सर्वात्मक कल्याण का स्त्रोत है।

वट *(Ficus benghalensis)* और पीपल *(Ficus religiosa)* में भी जीवाणु प्रतिरोधक तथा घाव भरने की क्षमता होती है। इसके साथ ही मधुमेह, वात रोग और आन्तशोथ में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। इसी कारण से ये पूजनीय वृक्षों में गिने जाते है।

सेमल *(Bombax ceiba)* वृक्ष की जड़, तना, पत्ती, फूल, गोन्द आदि को कमजोरी, नंपुसकता, मधुमेह, हृदयरोग, स्त्रियों के रोग, अल्सर आदि में उपयुक्त किया जाता है। कहना न होगा कि इस वृक्ष का अंग प्रत्यंग विभिन्न बीमारियों में औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है। इसे देववृक्ष भी कहा जाता है। सोसायटी फॉर माइक्रोवाइटा रिसर्च एण्ड इन्टीग्रेटेड मेडिसिन इसी आध्यात्मिक वृक्ष सेमल के संरक्षण की दिशा में कार्यरत है क्योंकि बाकी वृक्ष तो संरक्षित है, इसे ही नष्ट किया जा रहा है।

इन पाँच वृक्षों से बनी पंचवटी के बीच बैठकर मानसाध्यात्मिक साधना करने में विशेष लाभ होता है क्योंकि इन वृक्षों द्वारा आकर्षित धनात्मक माइक्रोवाइटा उस वातावरण को आध्यात्मिक परिवेश में बदल देते है जो वहाँ साधना करने वाले व्यक्ति को मानसिक तौर पर साधना के लिये विशेष सम्बल प्रदान करता है। हम सोच भी नहीं सकते हैं कि वनस्पति से भी माइक्रोवाइटा की मदद से आध्यात्मिक परिवेश तैयार कर मानव कल्याण के बारे में सोचा जा सकता है।

परवर्ती काल में इन वृक्षों को देवताओं का दर्जा दिया गया था ताकि इनकी रक्षा हो सके, परन्तु इस मूल भावना से हम कोसों दूर भटक गए। माइक्रोवाइटा के सिद्धान्त ने इस दिशा में हमें पुनः सोचने–विचारने और कुछ सृजनात्मक करने का अवसर प्रदान किया है।

- डॉ. एस. के. वर्मा

"सेमल लगाएँ, पंचवटी बनाएँ।
सेमल संरक्षण में, सभी हाथ बटाएँ।।"

ACTIVITIES OF SMRIM

1. **Semal Conservation -**
   (i) Development of Semal seedlings.
   (ii) Propagation through cuttings.
   (iii) Transplantation of Semal saplings in Udaipur and nearby areas.
   (iv) Awareness campaign.
   (v) Survey of the forest area for status of Semal.
2. **Release of first official bulletin of SMRIM (BOMRIM) 4-3-09.**
3. **Invitations** for conservation strategies and present status of Semal, by Forest Department, Udaipur, JRNRV University, Udaipur and Diocese level seminar, Udaipur.
4. **Publications in various magazines and journals**
   (i) Conservation of Silk Cotton Tree. Prout. 2008, 19:22-23.
   (ii) Protection against stress induced myocardial ischemia by Indian Kudzu (Pueraria tuberosa)- A case study. J Herbal Med Toxicol. 2009, 3:59-63.
   (iii) Mystery of Microvita (Hindi) - Bhakta Samaj. 2009, 8:21-23.
   (iv) Yaogika Cikitsa. Prout. 2009, 20:40-43.
5. Celebrated **World Environment Day on 5th June, 2009** with a panel discussion on "Environmental purity and our traditional knowledge".
6. Total number of **Life Members enrolled** : 53

READER'S COMMENTS

To combine science with spirituality is a sweet combination which all people endowed with intellect must appreciate and try to find "unifying" theories, because that is where all science tends to gravitate, the unified field theory of physics being a perfect example.

All the best for your endeavors.

- Dr. Tanvir Rizvi, DM, Interventionist, New Delhi.

First of all many thanks for such a wonderful article and spreading awareness to society about "Microvita". I appreciate your effort for taking some time out from your hectic schedule and publishing such an article that can add a lot of value to society and can make the human life better. It takes a lot of intellect, intelligence and devotion to put such a complex scientific concept in such a simple language, which is truly commendable.

- Akhilesh Singh, Software Analyst, Singapore.

I just received your mail attached is one article on microvita. It is very nice. I have been reading this article of Baba in english only and there are many points which was not clear to me. After reading your presentation in Hindi made me to understand some thing more. Specially example of Simul tree is very heart touching.

- Ac. Nityashuddhananda Av., SS, Kairo.

यौगिक चिकित्सा और आधुनिक विज्ञान - एक विश्लेषण

सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक चिकित्सा पद्धति के पीछे उसका अपना विज्ञान होता है। विज्ञान शब्द के व्यापक अर्थ में समझा जाय तो प्रत्येक चिकित्सकीय विधा के मूल में एक सिद्धान्त, परिकल्पना या अवधारणा होती है; जिसके आधार पर रोगजन्य अवस्थाओं का निदान और उपचार होता है, और उसके मानने वालों ने अपने तरीकों से उसे कसौटी पर कसा होता है। वह सिद्धान्त, जिसके आधार पर वह पद्धति प्रचलित है, उसे आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर परखा भी जा सकता है और नहीं भी; क्योंकि वर्तमान विज्ञान हमारे ज्ञानेन्द्रियों की सीमा के भीतर है और यह आवश्यक नहीं कि उसकी परिसीमा के बाहर जो भी है वह वैज्ञानिक नहीं। अतः इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि वर्तमान चिकित्सा पद्धति ही विज्ञान सम्मत है, बाकी अवैज्ञानिक है।

उदाहरण के तौर पर होम्योपेथी का वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि 'समः समं शमयति', आयुर्वेद का सिद्धान्त है वात, पित्त और कफ का असन्तुलन और यूनानी का वात, कफ, पित्त और रक्त का असन्तुलन; इसी तरह प्राकृतिक चिकित्सा, प्रकृति प्रदत्त तत्वों की रोग नाशक क्षमता तथा एक्यूप्रेशर शरीर में प्राण शक्ति 'ची' के असन्तुलन पर आधारित है। इस सन्दर्भ में यौगिक चिकित्सा के वैज्ञानिक सिद्धान्त के बारे में बहुत ही कम जानकारी है। यौगिक शास्त्र नाड़ी विज्ञान, चक्र और ग्रन्थी स्त्राव तथा वायु और प्राण वायु पर आधारित है। इन सबके बावजूद, आधुनिक विज्ञान इसके कई पहलुओं पर प्रकाश डालता है और इसके पीछे छिपे कई तथ्यों को उदभासित करता है।

यौगिक चिकित्सा – एक व्यापक व्यवस्था

उपरोक्त सन्दर्भ में श्री प्रभात रंजन सरकार का ''यौगिक चिकित्सा और द्रव्यगुण'' आध्यात्मिक साधक के जीवन में घटित सामान्य बीमारियों के उपचार के लिये उदाहरणीय संकलन है। इसमें उन्होंने व्यक्ति के जीवन में होने वाली लगभग सभी शारीरिक और मानसिक व्याधियों का वर्णन किया है और सीढ़ी दर सीढ़ी उनका विवरण दिया है। प्रथम, उनके कारणों की व्याख्या की है, द्वितीय उनके लक्षणों का विवरण दिया है और तीसरा उनके उपचार के बारे में आवश्यक दिशा–निर्देश दिये है। उपचार के लिये भी उन्होंने प्रथम, उचित योगासन और मुद्रा, द्वितीय, आहार में आवश्यक परिवर्तन तथा अन्त में प्राकृतिक पदार्थों का दवा के रूप में उपयोग किया है।

आध्यात्मिक पथ का अनुशीलन करने वालों के लिये ये सभी उपाय उनके गुरू के निर्देश हैं जिन्हे बिना किसी तर्क के स्वीकार करना है। परन्तु एक साधारण व्यक्ति के लिये यह सभी मात्र नुस्खे या टोटके प्रतीत होते हैं जो असरकारी हो भी सकते है और नहीं भी। आधुनिक वैज्ञानिक या चिकित्सक के लिये ये ''दादी माँ के नुस्खे'' प्रतीत होते है। परन्तु आध्यात्मिक वैज्ञानिक के लिये यह सभी चिकित्सा विधाओं का निचोड़ है जिसका वैज्ञानिक आधार है और सभी असरकारी उपचारों को विभिन्न पद्धतियों से लिया गया है तथा समाज के सभी वर्गों की पहुँच के भीतर है। आध्यात्मिक भाषा में यह सबसे सात्विक, चिकित्सा पद्धति है जो शरीर, मन और आत्मा को प्रभावित कर सम्पूर्ण स्वास्थ्य को अर्जन करने का सरल और सुलभ उपाय है।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि श्री सरकार की यौगिक चिकित्सा में विज्ञान का आलोक, मानवता के कल्याण की भावना, तथा सभी की पहुँच के भीतर होने के आश्वासन के साथ ही तन्त्र और वैद्यक शास्त्र का सुन्दर समन्वय, प्राकृतिक चिकित्सा का प्रभावकारी सम्मिश्रण, आयुर्वेद की कारगर वनौषधियों के चयन के साथ ही बीमारी की जड़ तक पहुँचने का सैद्धान्तिक आधार है; खासकर मानसिक वृत्तियों, अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों तथा हार्मोन का व्याधियों के होने और उसके उपचार में उपयोगिता का वैज्ञानिक स्पन्दन है। कई क्षेत्रों में उनके विचार वर्तमान विज्ञान से कई कोसों आगे हैं। वर्तमान युग की महामारी जनित व्याधियों जैसे मधुमेह, हृदयरोग, केन्सर इत्यादि के उदाहरणों से यह और स्पष्ट हो जायेगा कि उनके चिन्तन की परिधि कहाँ तक है।

यौगिक चिकित्सा का वैज्ञानिक आधार : कुछ उदाहरण

हृदय रोग

आधुनिक विज्ञान के अनुसार बहुप्रचलित हृदय रोग का अर्थ है हृदय की माँसपेशियों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप रक्त प्रवाह का न होना; जिसका मुख्य कारण है हृदय की रक्त वाहनियों में कोलेस्ट्रोल का जमा होना तथा वहाँ थक्का बन रक्त प्रवाह को कम अथवा पूर्ण रूप से बन्द कर देना। हृदय रोग होने की सम्भावना कई कारणों पर निर्भर करती है जिनमें से कुछ तो अपरिवर्तनीय है जैसे बढ़ती उम्र, वंशानुगतता तथा लिंग और कुछ को नियन्त्रित किया जा सकता है जैसे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, तम्बाकू का सेवन, मदिरा पान, खून में वसा की अधिकता, शारीरिक श्रम की अल्पता, मोटापा इत्यादि। इन सभी के पीछे जो मानसिक और भावनात्मक कारण हैं उन्हें उतना महत्व नहीं दिया गया है। यह एक सर्व विदित तथ्य है कि अधिक भय, क्रोध, शोक और खुशी में भी व्यक्ति की हृदयाघात से मृत्यु हो सकती है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान यह तो मानता है कि इन सभी उग्र भावनात्मक दशाओं में हृदयाघात हो सकता है परन्तु क्या ये

भावनात्मक अवस्थाएँ बीमारी के होने में अपनी भूमिका निभाती है? यौगिक चिकित्सा के अनुसार यह सम्भव है। निरन्तर क्रोध, लज्जा भाव की पुनरावृत्ति तथा भय और कामुकता का आधिक्य हृदय रोग के होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है; क्योंकि इन सभी दशाओं में हृदय का कार्य बढ़ जाता है जिसका प्रभाव अन्ततः हृदय को ही झेलना पड़ता है। यौगिक चिकित्सा के अनुसार इस तरह की बीमारियों का जन्म मन में होता है जो विभिन्न ग्रन्थियों के हार्मोन स्त्राव में आये असन्तुलन से प्रभावित होता है और उनका असर अन्ततः हृदय पर होता है। साधारण शब्दों में हृदय रोग का जनक है, हमारी मानसिक वृत्तियाँ, जैसे लोभ, घृणा, भय, लज्जा, मद, काम, आलस्य इत्यादि, का असन्तुलन; जो हमारे मन और मस्तिष्क को प्रभावित करता है और शारीरिक रूप में अभिव्यक्त होता है; जिससे रक्त प्रवाह और रक्तचाप बढ़ता है, हृदय गति बढ़ती है और उन सब से बढ़ती है हृदय की ऑक्सीजन की आवश्यकता; जिससे हृदय, उसकी रक्त वाहिनियाँ और माँसपेशियाँ प्रभावित होती है। लोभ में व्यक्ति अधिक खाता है, बार–बार खाता है, उसका आमाशय सदैव भरा रहता है, उसका यकृत अकारण अधिक कार्य करता है; मद के कारण वह धूम्रपान, मदिरापान आदि नशा करता है; लज्जा में रक्त वाहिनियाँ के फैलने से हृदय को रक्त संचार के लिये अधिक कार्य करना पड़ता है, यही कारण क्रोध में भी कार्य करता है। दोनों दशाओं में, क्रोध और लज्जा में, व्यक्ति का चेहरा लाल हो जाता है। भय से व्यक्ति की रक्तवाहिनियाँ अत्यधिक मात्रा में सिकुड़ जाती है जिससे सम्पूर्ण रक्त का प्रवाह हृदय की ओर हो जाता है। आलस्य में व्यक्ति शारीरिक श्रम से दूर भागता है परन्तु खाने का सिलसिला जारी रहता है।

अतः देखा जाय तो हृदय रोग के होने का कारण मानसिक वृत्तियों का बाहुल्य है और इन वृत्तियों का नियन्त्रण हमारे शरीर में स्थित चक्र (ग्रन्थियों) के हार्मोन`स्त्राव से होता है। यह भी विचारणीय है कि हमारे संस्कार के अनुसार हमारी वृत्तियाँ अभिव्यक्त होती है; और वृत्तियों और संस्कारों दोनों का ही नियन्त्रण सम्भव है। इन्हीं दोनों के नियन्त्रण हेतु यौगिक चिकित्सा में क्रमशः योगासन और मानसाध्यात्मिक साधना का प्रयोजन रखा है। साथ ही खान–पान और उपवास द्वारा हृदय, यकृत, वृक्क, उदर व अन्य अंगों सहित मन को पूर्ण विश्राम देकर नई शक्ति से अपने काम करने का अभिनव प्रयोग किया है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य–शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक, के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर श्री सरकार ने यौगिक चिकित्सा को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया है।

भारत में आने वाले वर्षों में हृदय रोग की प्रचुरता विश्व में सबसे अधिक होगी। वर्तमान चिकित्सा शास्त्रियों का सोचना है कि इस तथ्य को ध्यान में रख कर बचाव तथा उपचार दोनों पर ध्यान देना होगा और ध्यान देना होगा इस पर होने वाले व्यय पर भी। इस सन्दर्भ में यौगिक चिकित्सा के आधार पर यदि व्यक्ति अपना जीवनक्रम नियन्त्रित करे तो भविष्य में भारत व्याधियों का शरणस्थल न होकर जीवनी–शक्ति का दैदीप्यमान शिखर होगा।

मधुमेह

मधुमेह रोग वर्तमान युग में छूत की बीमारी की तरह फैल रहा है। वैज्ञानिक कहते है कि वर्ष 2020 तक भारत विश्व में मधुमेह रोग की राजधानी होगा। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार इस रोग में अग्नाशय से स्त्रावित इन्सूलिन की अंशतः अथवा पूर्णतः अल्पता होती है और उसके उपचार के लिये या तो इन्सुलिन बाहर से इन्जेक्शन के द्वारा लेना पड़ता है अथवा दवाओं के माध्यम से इसके स्त्राव को बढाना, अथवा शर्करा को बाह्य उपयोग द्वारा कम करना। कई दशाओं में इन्सुलिन अधिक मात्रा में होता है परन्तु उसके कार्य के विरूद्ध प्रतिरोध होने से वह अपेक्षित कार्य नहीं कर पाता। परन्तु इस रोग में इतना ही नहीं होता है। वृहद विचार से यह एक जटिल उपापचयी रोग है। इस सन्दर्भ में यौगिक चिकित्सा के अनुसार मधुमेह रोग वास्तव में अग्नाशय और यकृत का रोग है। अग्नाशय का ग्रन्थि रस शर्करा को नियन्त्रित करता है जबकि यकृत बाकी उपापचयी कार्य को निष्पादित करता है। यौगिक चिकित्सा के अनुसार इस रोग का रोगी भोजन के मामले में कुछ अधिक ही लालची होता है और इस अर्थ में उसे इस प्रलोभन को नियन्त्रित करना ही होगा। श्री सरकार के अनुसार इन्सुलिन जीवन शक्ति को बढ़ाने में सहायक होते हुए भी इस रोग का शमन नहीं कर सकता है। अतः इस रोग की मानसिक वृत्ति को ग्रन्थि रस के स्त्राव द्वारा नियन्त्रित करना होगा। साथ ही शरीरिक व्यायाम, भोजन में परिवर्तन, नियमित उपवास तथा कुछ दशाओं में अग्नाशय और यकृत को स्वस्थ्य रख कर इस रोग को प्रारंभिक अवस्था के साथ ही बढी हुई अवस्था में भी नियन्त्रित किया जा सकता है। अतः इन दोनों बीमारियों, हृदय रोग और मधुमेह, का जन्म मानसिक वृत्तियों के अभिप्रकाश में होता है और शारीरिक स्तर पर ये प्रतिभासित होती है, इसे ही कहा जाता है ''जैव मनोविज्ञान''। श्री सरकार ने मनुष्य

''मनुष्य का स्वास्थ्य शरीर, मन, प्राण और आत्मा के सम्यक सन्तुलन पर ही निर्भर करता है। यह सन्तुलन भौतिक चिकित्सा से, मानसिक और आध्यात्मिक साधना से और समन्वित चिकित्सा विधान के अनुसार सभी पद्धत्तियों के समन्वित स्वरूप से पूर्णतः बनाये रखा जा सकता है। यह माइक्रोवाइटा चिकित्सा व्यवस्था से ही सम्भव है।''

– श्री प्रभात रंजन सरकार

के विभिन्न रोगों में मानसिक वृत्तियों की विशिष्ट भूमिका देकर इस नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस दिशा में और अधिक अनुसन्धान करने की आवश्यकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

यौगिक चिकित्सा में विभिन्न रोगों के उपचार के बारे में श्री सरकार ने व्यवस्थित तरीका अपनाया है जिसके अन्तर्गत उपचार; योगासन, पथ्य और कतिपय व्यवस्था के सोपानों से गुजरता है। इसमें कतिपय व्यवस्थाओं (दवाओं) को कभी भी प्राथमिकता नहीं दी गई है। सदैव प्रथम आसन और मुद्राएँ जिससे मानसिक परिशोधन तथा चक्रों की शुद्धि, ग्रन्थियों के रस का नियन्त्रित स्त्राव; तत्पश्चात पथ्य, जिससे पाचन तन्त्र की शुद्धि और उसके बाद साधारण वनस्पतियों से ईलाज जो उचित परिवेश में प्रभावकारी सिद्ध होता है। इलाज का यह तरीका भले ही साधारण लगता हो परन्तु यह पूर्णतया वैज्ञानिक है। इस तथ्य को समझने के लिये हमें अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों, उनके ग्रन्थिरस (हार्मोन) के बारे में जानना होगा।

अन्तःस्त्रावी तन्त्र

हमारे शरीर में कई अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियाँ है जैसे पीनियल, पिट्यूटरी, थाइराइड, पेराथाइराइड, थाइमस, एड्रीनल, ओवरी, टेस्टीस इत्यादि। ये सभी ग्रन्थियाँ यौगिक शास्त्र में वर्णित चक्रों से सम्बन्धित है। इनके अलावा भी कई उपग्रन्थियाँ है जिनसे भी हार्मोन का क्षरण होता है और उनका शरीर और मन पर असर पड़ता है। यौगिक शास्त्र में प्रोस्टेट ग्रन्थि को भी इसी वर्ग में रखा गया जिसे आधुनिक विज्ञान नहीं रखता। प्रोस्टेट के ग्रन्थि रस से भी कई वृत्तियों का नियन्त्रण होता है। प्रत्येक वृत्ति की अभिव्यक्ति का नियन्त्रण यहीं ग्रन्थियाँ करती है और वृत्तियाँ कई रोगों के होने का कारण है। इस तथ्य को वर्तमान विज्ञान भी मानता है और जानता है कि ग्रन्थी रस के स्त्राव की अनियमितता से मानसिक लक्षण पैदा होते है। थायराइड ग्रन्थि के कम या अधिक स्त्राव का उदाहरण इस बात को पुष्ट करता है। थाइराइड ग्रन्थि के स्त्राव में कमी से व्यक्ति में सुस्तता, निद्रा की अधिकता, शारीरिक–मानसिक व वैचारिक शिथिलता तथा स्थूलता आ जाती है। वहीं इसके रस स्त्राव की अधिकता से व्यक्ति में उद्वेलितता, सचेतता, उद्विग्नता तथा दुर्बलता आ जाती है। कहना न होगा कि हार्मोन शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों के बीच की कडी है, असन्तुलित वृत्तियों का कारण है जो विभिन्न रोगों का जनक है।

हार्मोन – अन्तःस्त्रावी ग्रन्थि रस

प्रश्न उठता है हार्मोन क्या है और कैसे काम करता है? हार्मोन अति सूक्ष्म मात्रा में क्षरित इन ग्रन्थियों का रस है जो सीधे रक्त में स्त्रवित होता है। हार्मोन रासायनिक सन्देशवाहक का कार्य करते है। ये कार्यानुरूप सन्देश लेकर रक्त में अपने लक्षित ऊतक पर पहुँचते है। ये लक्षित ऊतक उस हार्मोन के कार्यानुरूप ग्राहीस्थल रखते है जहाँ पहुँच कर यह हार्मोन उन स्थानों में स्थापित हो अपने सन्देश को कार्य के रूप में परिणत कर देते है और तद्नुसार उन ऊतको में परिवर्तन होता है। इन सभी ग्रन्थियों को और उनके स्त्राव को उपयुक्त आसनों के द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है और यही है जैव–मनोविज्ञान का व्यवहारिक अनुप्रयोग।

स्त्रियों के हार्मोन इस्ट्रोजन के उदाहरण से इस बात को स्पष्ट समझा सकता है । यह हार्मोन अण्डाशय में बनते है। रक्त में क्षरित होकर अपने लक्ष्य स्थल तक पहुँचते है, वहाँ ग्राही स्थलों पर जुड़कर अपने साथ लाये सन्देश 'स्तन का विकास' देते है जिससे उनका समुचित विकास होता है। अतः हार्मोन लक्षित अंग/ऊतक के लिये सन्देश ले जाते है। इस सन्देश की अनुपस्थिति में लक्षित अंग का समुचित विकास नहीं हो पाता। वह अपने कार्य का सही रूप में निष्पादन नहीं कर सकता तथा रोग की स्थिति पैदा होने की सम्भावना बढ़ जाती है। अतः हार्मोन शारीरिक और मानसिक व्याधियों के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। अतः यह स्पष्ट है कि यौगिक चिकित्सा में क्यों ''मन और उसके मन'' – हार्मोन को बीमारियों की उत्पति और विकास में महत्व दिया है। इस पद्धति में उपचार भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। प्रथम ग्रन्थियों के रसस्त्राव हार्मोन को उचित आसनों द्वारा नियन्त्रित करना जिसके कारण कुछ प्रतिशत उपचार तो मात्र इसी से सम्भव हो जाता है क्योंकि यह रोग की जड़ तक प्रहार करता है।

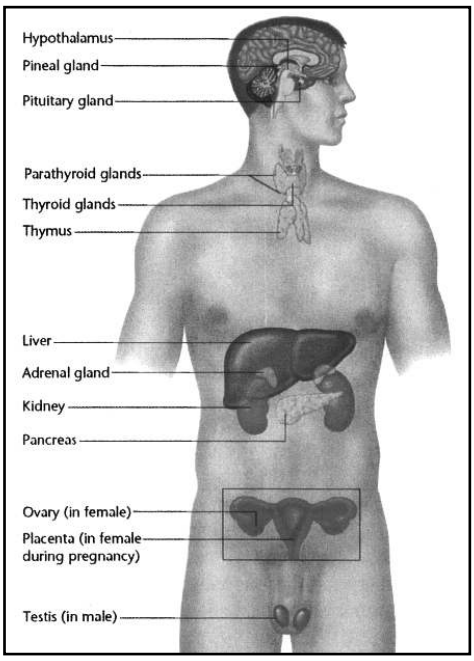

पथ्य द्वारा उपचार

आसन और मुद्राओं के पश्चात इस पद्धति में उस रोग में पथ्य की अनुकूलता और प्रतिकूलता के बारे में दिशा निर्देशन है। इस सन्दर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि कुछ अपवाद के अलावा इसमें पूर्ण शाकाहारी भोजन पर जोर दिया गया है। श्री सरकार के मतानुसार मनुष्य का शरीर और उसकी कार्य प्रणाली किसी भी

हालत में मांसाहारी भोजन के लिये उपयुक्त नहीं है और मांसाहारी भोजन अपने आप में कई रोगों जैसे केंसर, हृदय रोग, गठिया आदि का कारण बनता है।

शाकाहारी भोजन में भी अमुक बीमारी के लिए अमुक भोजन का चयन किया जाता है जो इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करते है कि ''तुम्हारा भोजन ही तुम्हारी दवा और तुम्हारी दवा तुम्हारा भोजन ही है''। इस पद्धति में आसन, मुद्रा और पथ्य के उचित उपयोग से हार्मोन का सन्तुलन तथा यकृत और आँत को इस तरह तैयार किया जाता है कि साधारण औषधियाँ भी अपनी पूर्ण क्षमता में असर करती हैं।

उपचार में पथ्य की भूमिका

इस सन्दर्भ में भूमिकुष्माण्ड जो हृदय रोग और उच्च रक्तचाप में प्रयुक्त होता है, के उदाहरण से इस चिकित्सा के वैज्ञानिक आधार को और बल मिलेगा। भूमिकुष्माण्ड, प्राकृतिक तौर पर पादप इस्ट्रोजन का भण्डार है, ये फाइटोइस्ट्रोजन रासायनिक तत्व हैं जो वनस्पतियों से प्राप्त होते हैं और इस्ट्रोजन हार्मोन जैसी क्षमता रखते है। इसमें आइसो–फ्लेवेनोइड वर्ग के रासायनिक तत्व होते है जिसमें प्यूरेरिन, डेडजीन, जेनिस्टिन, जेनीस्टीन आदि है। ये आइसो–फ्लेवेनोइड रक्तचाप को नियन्त्रित करते है, हृदय शूल को शमित करते है, केंसर के विरूद्ध लड़ते है और फ्री रेडिकल्स के दुष्परिणामों के विरूद्ध संग्राम करते है और साथ ही इस्ट्रोजन हार्मोन जैसे गुण भी रखते है । आश्चर्य की बात है कि यह इस्ट्रोजन हारमोन जैसा गुण न तो इस पादप में होता है न ही जब इसे दिया जाता है। छोटी आँत के जीवाणु जब इस पर अपनी क्रिया के द्वारा इसे सक्रीय घटक में परिवर्तित कर देते है तभी इसका असर देखा जाता है। ये जीवाणु इस पादप के रासायनिक पदार्थों को जटिल रासायनिक प्रक्रिया द्वारा ऐसे पदार्थो में रूपान्तरित कर देते है जो इस्ट्रोजन के समान कार्य करते है। यह रूपान्तरित रासायनिक पदार्थ तब शरीर में अवशोषित हो कर अपना लाभ–कारी प्रभाव दिखाते है। अतः इन फाइटोइस्ट्रोजन के प्रभावशाली होने में एक बड़ा अवरोध है वे अवस्थाऐं, जो आँत के इन जीवाणुओं को जो इस कार्य में महत्पुर्ण भूमिका निभाते है, प्रभावित करती है। अलाभकारी एवं अनुपयुक्त भोजन, तनाव, एन्टीबायोटिक इत्यादि सभी इन जीवाणुओं के स्वस्थ आदर्श सन्तुलन को अव्यवस्थित कर देते है और उस स्थिति में इस दवा का प्रयोग अर्थहीन हो जाता है। यह वैज्ञानिक तथ्य बताता है कि स्वस्थ आँत और उसमें पलने वाले स्वस्थ जीवाणु की कितनी महत्ता है।

हाल ही में किए गए अनुसंधानों ने भी यह साबित कर दिया है कि अत्यधिक वसा युक्त भोजन, जीवाणुओं की इस प्रकिया को शिथिल कर देते है, जबकि रेशेयुक्त भोजन से यह क्रिया त्वरित होकर इस दवा को प्रभावशाली रूप में परिवर्तित कर देती है। यह वैज्ञानिक उदाहरण यौगिक चिकित्सा में प्रतिपादित पथ्य तथा पाचन तन्त्र के महत्व को और अधिक उजागर करती है।

औषधि – उपचार का अन्तिम सोपान

जहाँ तक उपचार में प्रयुक्त औषधियों की बात है, वे सभी प्राकृतिक वनस्पतियाँ अथवा दैनिक भोजन में प्रयुक्त खाद्य सामग्री है। कोई भी अप्राकृतिक अथवा रासायनिक नही है। प्रकृति प्रदत्त पदार्थो में एक विशेष गुण होता है और वह है कि वे शरीर की सम–साम्यता को बनाए रखती है। एक ही दवा से प्राप्त तत्व दोनों तरह के गुणों से सम्पन्न होते है। कमी की दशा में उसे पूरा करते है और अधिकता के हालात में उसका विपरीत प्रभाव दिखाते है । पूर्व वर्णित उदाहरण को ही लेवें। भूमिकुष्माण्ड में मौजूद फाइटोइस्ट्रोजन एक ही पदार्थ होते हुए भी विपरीत परिस्थितियों में भिन्न–भिन्न प्रभाव डालते है। जैसे, जब शरीर में इस्ट्रोजन हार्मोन की कमी होती है तो ये इसको बढ़ाकर उस कमी वाली अवस्था के दुष्प्रभाव को शमित कर देते है। वहीं जब इन हार्मोन का आधिक्य होता है तो ये ही हार्मोन शरीर में इस्ट्रोजन के प्रभाव को कम कर देते है क्योंकि ये फाइटोइस्ट्रोजन ग्राही स्थलों से जुड़कर शरीर में अधिक मात्रा में मौजूद इस्ट्रोजन के कार्य को अवरूद्ध कर देते है और शरीर का कार्य फाइटोइस्ट्रोजन से ही चल जाता है। इस प्रभाव का अध्ययन कई वैज्ञानिकों ने किया है और कई शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुआ है।

यौगिक चिकित्सा – आध्यात्म आधारित वैज्ञानिक व्यवस्था

परमपुरूष ने इतनी सुन्दर प्राकृतिक व्यवस्था देकर हर क्षेत्र में अपना कल्याण सुन्दरम रूप प्रतिभासित किया है और यही कारण है कि यौगिक चिकित्सा में इन सभी कल्याणकारी प्राकृतिक सम्पदाओं का पूरा उपयोग हुआ है। कहना न होगा कि कितनी चतुराई से श्री सरकार ने वैज्ञानिक पद्धति से साधारण, हानिरहित, सहज उपलब्ध, कम खर्च परन्तु सख्त अनुशासन के साथ सोपान दर सोपान उपचार के द्वारा मनुष्य की सभी बीमारियों के लिये यौगिक चिकित्सा की सुन्दर व्यवस्था दी है। उपरोक्त गुणों के साथ ही इस पद्धति की अन्तर्निहीत भावना है ''सर्वे सन्तु निरामयाः''। यह चिकित्सा पद्धति विज्ञान और आध्यात्म का, पदार्थ और मन का, इलेक्ट्रोन और एक्टोप्लास्म का सुन्दर मिलन है और साथ ही है, माइक्रोवाइटा सिद्धान्त और जैव–मनोविज्ञान का व्यवहारिक अनुप्रयोग। इस पर और अनुसंधान की आवश्यकता है। आशा ही नही विश्वास किया जा सकता है कि निकट भविष्य में इसे और सुन्दर व सुव्यवस्थित रूप से समझने और समझाने में माइक्रोवाइटा साधना सम्पन्न आध्यात्मिक वैज्ञानिक अवश्य ही मदद करेंगे।

वर्तिका जैन डॉ. एस. के. वर्मा

SEMAL CONSERVATION & SURVEILLANCE

दैनिक नवज्योति

कहीं लुप्त ही न हो जाएं सेमल के वृक्ष

निरन्तर कटाई से खतरा

प्रातःकाल

लगातार कट रहा है बहुपयोगी सेमल

लुप्त होने की कगार पर

राजस्थान पत्रिका 7

उदयपुर, गुरुवार, 26 सितम्बर, 2008

सेमल के संरक्षण का संकल्प

कार्यालय संवाददाता

उदयपुर, 25 सितम्बर

विज्ञान महाविद्यालय में वनस्पति विज्ञान की शोधार्थी छात्रा वर्तिका जैन ने इस वृक्ष सेमल के संरक्षण का बीड़ उठाया है। वर्तिका ने स्थान वन क्षेत्र केवड़े की नाल से सेमल के बीजों को एकत्र कर करीब पचास पौधे विकसित किए व इसी वर्ष जुलाई व अगस्त माह में शहर के आस-पास सीमज माता, दधवलाई, चित्रकूट नगर, पानेरियों की माइंडी, सज्जनगढ़, सुन्दरवास आदि स्थानों पर रोपण किया। वर्तिका वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. एस.एस. कटारिया व आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज के डॉ. एस के. शर्मा के मार्गदर्शन में सेमल वृक्ष के औषधीय महत्व पर शोध कर रही हैं।

दैनिक नवज्योति

सेमल वृक्ष संरक्षण पर उदयपुर की पहल

सिटी.उदयपुर

दैनिक भास्कर

उदयपुर, बुधवार 6 मई, 2009

केवड़े की नाल में पेड़ों की अवैध कटाई

नगर संवाददाता, उदयपुर

आयुर्वेद के लिहाज से उपयोगी सेमल के पेड़ों की अवैध कटाई धड़ल्ले से हो रही है। केवड़ा की नाल में ही एक पखवाड़े में दो बड़े पेड़ काटे गए हैं। सोसायटी ऑफ माइक्रोबियल रिसर्च एंड इंटीग्रेटेड मेडिसिन (एसएमआरआईएम) के अध्यक्ष डॉ. एस.के. वर्मा ने बताया कि दोनों ही पेड़ केवड़ा की नाल में सड़क किनारे कटे मिले, जिन्हें आरी चलाकर काटा गया। दोनों ही वृक्ष पुष्पित थे।

यहां मिलता है सेमल का वृक्ष : शहर के आसपास के क्षेत्रों में सेमल के वृक्ष नीरवा, केवड़ा, हवाला आदि गांवों में बहुतायत में मिलते रहे हैं। होली पर इनकी टहनियां जलाई कर होलिकोत्सव मनाया जाता है, ऐसे में गांवों में इसे होली भी कहा जाता है। इन दिनों ऐसा कोई पर्व भी नहीं, इसके बावजूद सेमल को काटा जा रहा है।

इसलिए उपयोगी है सेमल : वैद्य शंभूलाल औदिच्य के अनुसार सेमल के वृक्ष की छाल से लेकर जड़ तक का उपयोग आयुर्वेद मेडिसिन में होता है। तने से निकलने वाले पदार्थ को मोचरस कहा जाता है जिसका उपयोग श्वेत प्रदर ग्रस्त महिलाओं के लिए होता है। फटी और पाइल्स की बीमारी में पेड़ की छाल का घोल पिलाया जाता है। लू व अतिसार में भी इसका उपयोग होता है। दंडाई में पेस्त के दानों के साथ सेमल के फूल होते हैं। इससे मंजन भी बनाया जाता है, जो मसूड़ों के लिए लाभदायक है। छोटे पेड़ की जड़ का उपयोग ताकत की दवा के रूप में किया जाता है। कांटों का उपयोग कील मुंहासों के उपचार के लिए होता है। इनके फूलों को पानी में डालकर लू पीड़ित को स्नान कराया जाता है।

केवड़ा की नाल में कटे पड़े सेमल पेड़ के तने।

राजस्थान पत्रिका

उदयपुर, बुधवार, 6 मई 2009

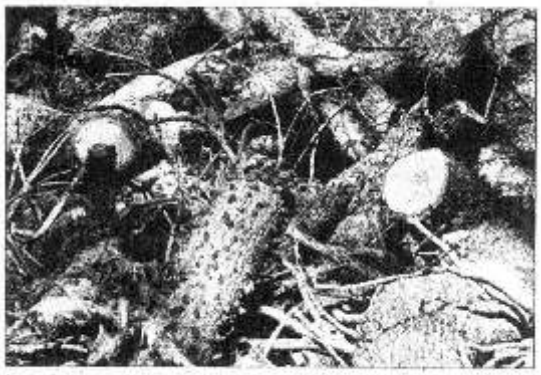

केवड़े की नाल में सेमल के कटे हुए पेड़।

सेमल के पेड़ों पर कहर

उदयपुर, 5 मई (कासं)। जिले के जंगलों में बहुतायत में खड़े सेमल के पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाने का क्रम एकाएक बढ़ गया है। गत एक सप्ताह में ही सेमल के दो विशाल पेड़ों को काट दिया गया।

सोसायटी फॉर माइक्रोबाईटा रिसर्च एण्ड इण्टीग्रेटेड मेडिसन के सदस्यों ने गत दिनों केवड़ा की नाल क्षेत्र के दौरे में इस प्रकार का विनाश देखा। संगठन के अध्यक्ष डॉ. एस.के. वर्मा ने बताया कि जिन दो विशाल पेड़ों को काटा गया उन पर मधुमक्खियों ने अपना आश्रय स्थल बना रखा था। उन्होंने बताया कि सेमल वृक्ष को ऋषि मुनियों ने अपनी पंचवटी में लगाया और विज्ञान ने अनुसंधान कर इसकी औषधीय महत्ता स्थापित की। संगठन ने वन विभाग के अधिकारियों से उचित कार्रवाई कर इस दुर्लभ प्रजाति के पेड़ों को बचाने का आग्रह किया है।

अपराह्न टाइम्स

फूलों व फलों से लदे सेमल के वृक्ष काट डाले

WHAT IS MICROVITA ?

Microvita : Micro- Small, Vita- Living

Definition : Entities or objects which come within the realm of both physicality and psychic expressions, which are smaller or subtler than atoms, electrons or protons; and in the psychic realm, may be subtler than ectoplasm or its extra-psychic coverage; endoplasm have been termed as "Microvita" (Singular- Microvitum) by Shri P. R .Sarkar.

Physicality : The position of microvita is just between ectoplasm and electron, but they are neither ectoplasm nor electron.

Categories :

A) Based on density or subtlety -

First : Coming within the scope of a highly developed microscope.

Second : Not coming within the scope of a perception but coming within the scope of perception as a result of their expression or actional vibration.

Third : Not coming within the scope of common perception but coming within the scope of a special type of perception which is actually the reflection of conception within the periphery of perception.

B) Based on nature -

1. Positive
2. Negative
3. Neutral/Ordinary

Movement :

- Move throughout the entire universe.
- Move unbarred, without caring for the atmospheric conditions.
- Move through a medium or media i.e. sound, form, figure, smell, tactuality or ideas.

Root cause of life :

Microvita create minds and bodies and also destroy minds and physical bodies. The root cause of life is not the unicellular protozoa or unit protoplasmic cell, but this unit microvitum.

To,

_____

_____

_____

_____

From :
Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA Mobile : 9414168910
E-mail : skvermaster@gmail.com, smrim08@gmail.com

AIMS AND OBJECTIVES OF SMRIM :

1. To propagate the knowledge and science of microvita by psycho-spiritual practice in individual and collective life.
2. To increase moral values, to generate scientific thinking, to remove dogma with the spread of knowledge of microvita at school, college and university levels.
3. To initiate and inspire about research on Yogic, Vaedic, Naturopathic, Ayurvedic and Homoeopathic schools of medicine.
4. To incorporate faculty of Physics, Chemistry, Botany and Medicine for research on microvita and integrated medicine; including research on medicinal plants and Homoeopathic medicine.
5. To organize free medical camps in villages and cities involving specialists of different system of medicine.
6. To publish result of the research in national and international journals and interact with other people working in the field in and out of the country.
7. To make judicious use of different systems of medicine and microvita for the treatment of diabetes, hypertension, heart diseases, cancer and diseases of modern era.
8. To establish laboratory and research centers for relentless research on microvita and integrated medicine for the welfare of entire humanity.

Who can join?

Any person interested in serving humanity through research on microvita and integrated medicine and abides rules and regulations of the society can become the member of the society.

Life Membership fee : Rs. 1500/- (Once)

Contact :
PRESIDENT, SMRIM
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA Mobile : 94141-68910
E-mail : skvermaster@gmail.com, smrim08@gmail.com

"There should be extensive research work regarding this microvitum or these microvita. Our task is gigantic and we are to start our research work regarding these microvita immediately without any further delay, otherwise many problems in modern society will not be solved in a nice way".

- P. R. Sarkar

Published by : Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM), Udaipur (Raj.) INDIA
Editor in Chief : Dr. S.K. Verma
Assoc. Editor : Vartika Jain
Printed at : National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)

FOR MEMBERS ONLY